।।श्री राधा।।

श्री वसन्त पंचमी उत्सव

माघ मास की शुक्ल पंचमी के दिन 'वसंत' का पर्व मनाया जाता है। इस सम्बन्ध में परम पूज्य श्री राधा बाबा द्वारा विरचित 'श्री जय जय प्रियतम महाकाव्य' में निम्नलिखित छन्द (छन्द ४१४) है-

वह आम्रमंजरी प्राशन की, दो नगरवासियों की प्रियतम।
नीली लहरोंवाली तटनी तटपर की होली की प्रियतम।
रसमयी पंचमी की लीला, छप्पन शुभ मास तथा, प्रियतम।
दिन एक आजसे पहले की, ली देख तपोधन ने, प्रियतम।

आइए, इसी छन्द से परम पावन पर्व 'वसन्त पंचमी' का हम स्वागत करें। उक्त छन्द में वर्णन है उस क्षण का जब महर्षि श्रीदुर्वासाजी को, वसन्त पंचमी पर पूर्व घटित एक दिव्य होली लीला के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। प्रियतम महाकाव्य की टीका 'प्रियतम सौरभ' में श्रद्धेय श्रीराधेश्यामजी बंका इस छन्द का अर्थ वर्णन करते हुए लिखते हैं- 'आम्र-मंजरी-प्राशन की पावन तिथि वसन्त पंचमी से होली के रसमय उत्सव का शुभारम्भ होता है, जिसे **वसंतोत्सव** भी कहते हैं।' यह वसंतोत्सव श्री प्रिया-प्रियतम के प्रेम रस का ऐसा उच्छलन है जो उमड़-उमड़कर पूरी प्रकृति में व्याप्त हो जाता है। अतः श्री युगल के परम दिव्य वसंतोत्सव में हम भी सम्मिलित हो सकें इसके लिए वसंत पंचमी के दिवस से ही हमें तैयारी आरम्भ कर देनी चाहिए।

जब तक बुद्धि अज्ञान से आच्छादित रहती है तब तक श्री युगल की दिव्य लीलाओं का चिन्तन अथवा अनुभव होना असम्भव है। शुद्ध हुई बुद्धि तथा शुद्धान्तःकरण में ही श्री प्रिया-प्रियतम अपनी दिव्य क्रीड़ा करते हैं। वास्तव में प्रत्येक जीव की यही अभिलाषा है कि शीघ्रातिशीघ्र उसका परमात्मा से एकत्व स्थापित हो जाए। जीव की इस अभिलाषा की पूर्ति हेतु तत्सुखसुखित्व भावापन्न श्री राधिका रानी सदैव ही उत्कण्ठित रहती हैं। इसी हेतु वे अपने प्रिय भक्तों के अज्ञानान्धकार को हरने, तम-नाशिनी, सद्बुद्धि-प्रदायिनि 'सरस्वती देवी' के रूप में वसन्त पंचमी के दिवस आर्विभूत होती हैं। श्री 'राधा माधव चिन्तन' नामक पुस्तक में नित्यलीलालीन परम पूज्य बाबूजी श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार जी, इसी तथ्य को प्रमाणित करते हुए लिखते हैं-

'स्वयं श्री भगवान् ने ही श्री राधा जी से कहा है-

यथा त्वं राधिका देवी गोलोके गोकुले तथा।
बैकुण्ठे च महालक्ष्मीर्भवती च सरस्वती। *(ब्रह्मवैवर्तपुराण, कृष्णखण्ड)*

अर्थात् 'हे राधे! जिस प्रकार तुम गोलोक और गोकुल में श्री राधिका रूप से रहती हो, उसी प्रकार बैकुण्ठ में महालक्ष्मी और सरस्वती के रूप में विराजमान हो।" (पृष्ठ २५)

इसी कारण माघ मास की शुक्ल पञ्चमी को मनायी जाने वाली वसंत पञ्चमी को 'श्री पंचमी' एवं 'सास्वतोत्सव' भी कहा जाता है। परम पूज्य बाबूजी पद रत्नाकर में लिखते हैं-

'माँ सरस्वती दे शुचि विद्या-बुद्धि हरें सारा अज्ञान'

सरस्वती देवी के रूप में राधा रानी के इस पूजन की अनुपम महिमा है। प्राचीनकाल में माघ मास की मकरसंक्रान्ति पर सूर्य के उत्तरायण होने के बाद ही बालकों का उपनयन संस्कार किया जाता था। इसी संस्कार के बाद वे अध्यात्म विद्या का पठन-पाठन आरम्भ करते थे **तथा गुरुकुल का सत्र भी बसन्तपञ्चमी से आरम्भ होता था।** इसीलिए, इस शुभ संस्कार का दिन, ज्ञानदात्री देवी का जन्मदिवस 'वसन्त पञ्चमी' रखा गया। 'पञ्च' धातु का उपयोग 'प्रकट करने' अथवा 'विस्तारपूर्वक बोलने' के अर्थ में किया जाता है। भगवती सरस्वती द्वारा चारों वेदों का ज्ञान संसार में विस्तार को प्राप्त होता है। इसी कारण वसन्त पञ्चमी का दिन विद्यारम्भ के लिए सबसे उपयुक्त समझा जाता है और उत्सव रूप में भी मनाया जाता है।

इस दिवस का एक और महत्त्व है। चैतन्य महाप्रभु की सहधर्मिणी परम भक्तिमति श्री विष्णु प्रिया जी का जन्म दिवस भी इसी तिथि को होता है। एक बार महाभावनिमग्न श्री राधा बाबा ने भी अत्यन्त भावपूर्ण रीति से श्रीविष्णु प्रियाजी का जन्मदिवस गीतवाटिका में मनाया था।(श्रद्धेय श्री राधेश्याम जी बंका द्वारा कृत 'प्रीतिरसावतार महाभाव निमग्न श्री राधा बाबा' पृष्ठ ४०३)। श्री विष्णु प्रिया जी का समर्पित जीवन- कठोर तप का, महान उत्सर्ग का, दिव्य भाव का मूर्तिमान स्वरूप था। वास्तव में श्री प्रिया-प्रियतम (राधा-कृष्ण) ही कलियुग में श्री चैतन्य महाप्रभु एवं भक्तिमती विष्णुप्रिया जी के रूप में अवतरित हुए थे।

उक्त वर्णित प्रसंगों से इस दिवस की महत्ता अनन्तगुनी हो जाती है। दुर्भाग्यवश, वर्तमान समय में इस परम पवित्र दिवस का अत्यन्त ही विकृत रूप दिखाई देता है। जिस दिवस का सदुपयोग अपने सम्पूर्ण अज्ञान को नाश करने तथा भगवद्भक्ति प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रीति से किया जाना चाहिए, उस दिवस को मात्र प्रमाद व भोग विलास रूपी धधकती अग्नि में भस्म कर दिया जाता है। परम पूज्य बाबूजी एवं परम पूज्य राधा बाबा के वात्सल्यमय स्नेह का यह अनादर ही होगा, यदि हम उनके द्वारा प्रदत्त साधन मार्ग पर न चलकर प्रचलित सांसारिक मान्यताओं के प्रवाह में इस दिवस को व्यर्थ गँवा दें। भगवती सरस्वती - विद्या, बुद्धि, ज्ञान, वाणी और संगीत - इन पंच कलाओं की अधिष्ठात्री देवी है। अतः इन पाँचो कलाओं के सदुपयोग से ही उनकी इस दिवस आराधना करनी चाहिए। इस प्रकार आराधना करने से मनुष्य का जीवन पाशविक स्तर से उठकर, मानवोचित स्तर पर आ जाता है, जिससे वह इस योग्य हो जाता है कि अपनी चेतना को दिव्य परमात्म चेतना में स्थापित कर सके।

श्री युगल की वसंतोत्सव लीला में सम्मिलित होने हेतु तथा श्रीराधा किशोरी के ही विभिन्न रूपों की आराधना कर उनसे प्रार्थना करने हेतु वसंत पञ्चमी को 'साधन दिवस' के रूप में मनाना हमारा पुनीत कर्तव्य एवं परम सौभाग्य है।